International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 81-85

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 81-85
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-02-2024
Accepted: 24-03-2024

रामकेश बैरवा
सहायक आचार्य संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय,
सपोटरा (जिला करौली),
राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
रामकेश बैरवा
सहायक आचार्य संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय,
सपोटरा (जिला करौली),
राजस्थान, भारत

वैदिक वाङ्मय में मंत्र विचार, विनियोग एवं प्रयोग: एक अवलोकन

रामकेश बैरवा

प्रस्तावना

अमन्त्रमाक्षरं नास्ति, नास्ति मुलमनौषधम्।
अयोग्यपुरुष: नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभ:।।

इस संसार में ऐसा कोई भी अक्षर नहीं है जिससे मन्त्रा नहीं बन सकता है अर्थात् विना मन्त्र के कोई अक्षर नहीं है। और ऐसा कोई पौधा नहीं है जिससे कोई औषधि नहीं बन सके। अर्थात प्रत्येक पौधा औषधि उत्पादक है। कोई भी पुरुष अयोग्य नहीं है अर्थात् प्रत्येक पुरुष में गुण विद्यमान है। परन्तु इनको मिलने वाला योजक दुर्लभ है। इस प्रकार जब हम मन्त्र के बारें में विचार करते है तो मानव जीवन के परिप्रेक्ष्य में मन्त्र शब्द के प्रति जन भावना में अविश्वास सा मालूम प्रतीत होता है। किन्तु मन्त्र मानव जीवन के हर पहलू में आवश्यक विचारों को उत्प्रेरित करता है। मन्त्र को श्लोक, पद्य तथा ऋचा आदि नामों से भी अभिहित किया गया है। मन्त्र शब्द की उत्पत्ति को सबसे पहले आदि ग्रन्थ ऋग्वेद में देखा जाता है।

"मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम[1]" अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मण ग्रन्थ दोनों का नाम ही वेद है। इस प्रकार वेद नाम से कई वेद अभिहित हुए। जैसे - चारों वेदों के अतिरिक्त उपवेद सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहासवेद, और पुराण वेद आदि। इसके अतिरिक्त नाट्यशास्त्र को पंचम वेद तथा महाभारत को भी पंचम वेद माना गया है। यह वेद शब्द मन्त्र शब्द का ही स्वरूप है। क्योंकि ब्राह्मण ग्रन्थ तो वेदों की व्याख्यान रूप मात्र है। व्याख्यान मात्र होने से ब्राह्मण ग्रन्थ

[1] मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ. ५६

मंत्रों पर सदा आधारित माने गए है। मन्त्र वेदार्थ ज्ञान के प्रतिपादक माने गए है। प्राचीन काल में ऋषि, मुनियों ने जिस आत्मतत्त्व के ज्ञान अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान का आभास किया या साक्षात्कार किया। वह शब्द समूह मन्त्र नाम से अभिहित हुए।

मन्त्र शब्द की उत्पत्ति:- वैयाकरणों द्वारा मन्त्र शब्द को तीन प्रकार से स्पष्ट किया गया है।

1. ज्ञानार्थक:- दिवादिगण की ज्ञानार्थक मन् धातु में ष्ट्रन् प्रत्यय जोड़ने पर मन्त्र शब्द की उत्पत्ति होती है। मन्यते (ज्ञायते) ईश्वरादेश: अनेन इति मन्त्र।[2]
2. विचारार्थक:- तनादिगण की विचारार्थक मन् धातु में ष्ट्रन् प्रत्यय जोड़ने पर मन्त्र शब्द की उत्पत्ति होती है। मन्यते (विचार्यते) ईश्वरादेश: येन स मन्त्र:।[3]
3. सत्कारार्थक:- मन्यते (सत्क्रियते) देवताविशेष: अनेन इति मन्त्र।[4]

मन्त्र शब्द की अनेक व्याख्या होने पर केवल एक ही अर्थ निकलता है कि वेद मन्त्र उनको कहा जाता है। जिसमे ईश्वरीय ज्ञान अभिव्यापक हो।

वेद मन्त्रों की त्रिधा अभिव्यक्ति भी प्रसिद्ध है -

1. **ऋचा - ऋच्यते स्तुयते अनया इति ऋच्।**[5] ऐसे मन्त्र जो वैदिक देवी - देवताओ की स्तुति से संबंध रखते है। ये पद्य बद्ध होते है।
2. यजुष् - **यजति यजते वा अनेन इति यज + उसि:** यजुष्।[6] अर्थात् जिन मन्त्रों में पूजा अर्चना का विधान है। ये गद्य में होते है।
3. ३ सामन् - **स्यति नाशयति विघ्नं इति सामन्**। और **समयति संतोषयति देवान् अनेन।**[7] अर्थात् वे मन्त्र जो यज्ञों के आयोजन के समय प्रत्यूह निवारण के लिए गाए जाते है। मन्त्रों की त्रिधा अभिव्यक्ति के बाद तीन नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद निर्धारित हुए। इन तीनों वेदों की ही तीन मन्त्र संहिता ऋक संहिता, यजुर्वेद संहिता और सामवेद संहिता कहलाई। किन्तु वेद चार है। तीनों संहिताओं में जो मन्त्र विद्यमान थे उनके अलावा कुछ मन्त्र जैसे - मारन, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन विषय से संबंधित थे ऐसे मन्त्रों का अभिधान 'अथर्व' हुआ और वेदों की संख्या चार हो गई। चारों वेदों में मंत्रात्मक विनियोग की परंपरा को अपनाया गया है। ऋग्वेद को मण्डल और अष्टक क्रम में बाँटा गया है इसमे कुल १०५८० के लगभग मन्त्रों को निबद्ध किया गया है। इसी प्रकार अन्य वेदों में भी मन्त्रों का विनियोग निर्धारित किया गया है। मन्त्रों के उच्चारण करने के लिया व्यक्ति की योग्यता को निर्धारित किया है। जिस प्रकार व्यक्ति को कार्य को करने के लिये गुण और अवगुण का निर्धारण होता है उसी प्रकार मन्त्रों का उच्चारण करने के लिया व्यक्ति का आधिकारिक होना बहुत जरूरी है। इसमें सब प्रमुख गुरु मार्ग होता है। शिष्य को गुरु के पास जाकर गुरु मन्त्र प्राप करके उसका जाप करण चाहिए और गुरु कृपा प्राप्त करके ही गुरु के निर्देश अनुसार मन्त्रों का जाप करण चाहिए।

मन्त्र साधन करने के लक्षण

निर्जित मदनाटोप: प्रशमित कोपो विमुक्त विकथालाप:।
देव्यर्चनानुरक्तो जिनपद भक्तौ भवेन्मन्त्री।।[8]

---

[2] **मन्यते (ज्ञायते) ईश्वरादेश: अनेन** इति मन्त्र:, संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ. ५९

[3] **मन्यते (विचार्यते) ईश्वरादेश: येन स मन्त्र:,** तत्रैव पृ. ५९

[4] **मन्यते (सत्क्रियते) देवताविशेष: अनेन** इति मन्त्र:, तत्रैव पृ. ५९

[5] **ऋच्यते स्तुयते अनया इति ऋच्,** तत्रैव पृ. ५९

[6] **यजति यजते वा अनेन इति यज + उसि:** यजुष्, तत्रैव पृ. ५९

[7] **स्यति नाशयति विघ्नं इति सामन्**। और **समयति संतोषयति देवान् अनेन,** तत्रैव पृ. ५९

[8] यंत्र मन्त्र तंत्र पृ १,२

मंत्राराधना शूर: पाप विदूरे गुणेन गम्भीर:।
मौनी महाभिमानी मन्त्री स्यानीदृश: पुरुष:।।[9]
गुरुजन हितोपदेशो गततन्द्रो निद्रयापरित्यक्ता:।
परिमित भोजनशील: स स्यादाराधको मन्त्रा:।।[10]
निर्जित विषय कषायोधर्मामृत जनित हर्षगत काय:।
गुरुतर गुण सम्पूर्ण: समवेदाराधको देव्या: मन्त्रा:।।[11]
शुचि: प्रसन्नोगुरुदेव भक्तो दृढ व्रत: सत्य दया समेत:।
दक्ष: पटुर्बीज: पदावधारी मन्त्री भवेदीदृश: एवलोके।।[12]
एते गुणायस्य न सन्ति पुंस: क्वचित कदाचिन्न भवेत स मन्त्री।
करोति चेद्यर्प वशात् स जाप्यं प्राप्नोत्यनर्थफणिशेखराया:।।[13]

इस प्रकार जिस व्यक्ति ने कामदेव को जीत लिया है, क्रोध रहित है, गुणवान है, गुरुकृपा का पात्र है, तंद्रा रहित है, नियम पूर्वक भोजन करता है,जिसके विषय - विकार नष्ट हो गए है, पाप से दूर रहने वाला है आदि गुणों से युक्त पुरुष ही मन्त्रों की आराधना कार सकता है। वही मन्त्री कहलाता है। जो व्यक्ति उपर्युक्त गुणों से रहित है वह कदापि मन्त्री नहीं हो सकता है।

इस प्रकार आचार्य सदानंद योगी ने वेदान्तसार मे भी वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए अनुबंध चतुष्टय का प्रमाण दिया कि वही व्यक्ति ही वेद मन्त्रों का अधिकारी होता है जो आधिकारिक होता है इस संबंध में उन्होंने वेदान्तसार में प्रतिपादित किया है -

तत्रानुबन्धो नामाधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि।[14]

किसी भी ग्रंथ को पढ़ने से पहले एक जिज्ञासा आती है कि इस ग्रन्थ को पढ़ने का अधिकारी कौन है, यह किस विषय से सम्बद्ध है और ग्रन्थ और विषय का क्या सम्बन्ध है तथा इसके पढ़ने का क्या प्रयोजन है।

अधिकारी तु विधिवदधीत वेदागत्वेनापाततोऽधिगता खिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्ज़नपुर: सरं नित्यनैमित्तिक प्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्त: साधनचतुष्टयसम्पन्न: प्रमाता।

अर्थात् किसी ग्रन्थ को पढ़ने या मन्त्रों का पाठ करने का अधिकारी वही होता है जिसने इस जन्म में या पूर्व जन्म में विधिपूर्वक वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया है, शास्त्रों के द्वारा निषिद्ध कर्मों का त्याग किया है।

मन्त्रों का देहगत प्रभाव

"मानव शरीर पर मन्त्रों का देहगत प्रभाव सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होता है। शरीर को एक उपकरण या साधन के रूप में स्थापित माना जाता है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि साधन कौन है। उसका साध्य कौन है। आगामी पीढ़ियों ने इसका समाधान खोजा। कई तरह के समाधान प्राप्त किए किन्तु संतुष्टि प्राप्त नहीं हुई। द्वैत और अद्वैत का मार्ग इस प्रश्न के कारण ही बना क्योंकि इस सम्बन्ध में दोनों के तर्क प्रबल थे। वस्तुत: दोनों में कोई अन्तर नहीं था। किन्तु साधनगत विभेद इतना हो गया था कि दोनों एक दूसरे के विरोधी हो गए। बाद में दोनों ने यह ही कहा था कि वही साधक है और वही साध्य है। एक ब्रह्म कहता है और दूसरा माया। दोनों का विवेच्य अर्थ एक ही है और इस ब्रह्म और माया का क्षेत्र ही हमारे लिया सहगम्य तथा प्राप्त करने योग्य है। भौतिकतावादी सांसारिक अनुभूतियों का केंद्र बिन्दु एक ही है। अन्त:करण

[9] तत्रैव
[10] तत्रैव
[11] तत्रैव
[12] तत्रैव
[13] तत्रैव
[14] वेदान्तसार पृ २८

का अधारस्थल भी यही है। इसमें मन्त्र प्रमुख है। अन्त:करण के बाद बहि:करण का क्षेत्र आता है। इसके अन्तर्गत सारे सूक्ष्म स्तर इंद्रिय आयामों से जुड़ जाते है। मन, बुद्धि और चित् का गुणात्मक जगत सूक्ष्म से स्थूल तक क्रमागत हो जाता है। जो आकाश जैसे अमूर्त से चलकर पृथ्वी जैसे मूर्त तक आ पहुचता है। यह तत्व है किन्तु अन्त:करण (देह) और बहि:करण (भौतिक देह) के बीच में एक स्तर रहता है जिसे शक्ति स्तर कहते है क्योंकि इस प्रकृति में शक्ति के बिना गति नहीं और गति के बिना परिवर्तन नही। इसे हम वैद्युतिक शरीर क सकते है। इसमे दोनों प्रकार की ऊर्जा का उत्पादन और विसर्जन होता है और आश्चर्य यह है कि हमारे शरीर जगत में संवाही और असंवाही अङ्ग होते है। इसके वावजूद दोनों के परस्पर अनुस्यूत रहते हुए सारा कार्य होता है। हमारा शरीर घर्षनिक ऊर्जा उत्पन्न करता है। और मन चुम्बकीय ऊर्जा। शारीरिक ऊर्जा का निर्गम मार्ग हाथ - पैर है और चुंबकीय ऊर्जा का मार्ग नेत्र है। यों तो ऊर्जा सम्पूर्ण शरीर में विद्यमान रहती है फिर भी ये अङ्ग ऊर्जा के प्रमुख निर्गम मार्ग है। आँख बंद करके ध्यान करने या मन्त्र जाप करने की व्यवस्था के पीछे यह भी कारण है कि इसमे सकारात्मक ऊर्जा का अनर्गल विकिरण नहीं होता है। वह ऊर्जा संतुलित एवं प्रबल होकर एक निश्चित दिशा की ओर प्रबल होकर गमन करने लगती है। हमारी आत्मीयता का ज्ञान हमारी आँखों के द्वारा इसलिये होता है कि वह मन के द्वारा उत्पन्न विद्युत तरंगों की संवाही होती है।"[15]

कुछ महत्वपूर्ण मन्त्रों की उपयोगिता

१ प्रणव (ॐ) मन्त्र:- भारतीय दर्शन की संस्कृति और परम्परा में प्रणव (ॐ) का प्रचार- प्रसार बहुतायता से फैला हुआ है। यह प्रणव (ॐ) हिन्दू दर्शन के अतिरिक्त जैन, बौद्ध आदि दर्शनों में भी महत्ता रखता है। प्रणव (ॐ) का उच्चारण प्रत्येक मन्त्र को बोलने से होता है। प्रणव (ॐ) मन्त्र के माहात्म्य को भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में भी कहा है कि मन्त्रों में मै प्रणव (ॐ) हूँ। अतः प्रणव (ॐ) बहुत शक्तिशाली मन्त्र है। इसके स्वतंत्र देवता गणपती है। वे विघ्नों को नियंत्रित करते है। प्रमुख रूप से गणपति के रूप में हम प्रणव (ॐ) का अर्चन करते है। गणेश जी के सम्बन्ध में जो कथा है उस कथा के अंतर्गत शंकर जी गनेश जी का शिरच्छेद करके शिर को प्रणव (ॐ) रूप में स्थापित करते है। इस कथा के माध्यम से शंकर जी ने यह शिक्षा दी है कि जिस किसी मन्त्र के दूषित होने की सम्भावना रहती है उसमे प्रणव (ॐ) मन्त्र जोड़ने पर वह मन्त्र पूर्ण निर्दोष हो जाता है। प्रणव (ॐ) मन्त्र हमे एक विशुद्ध मार्ग का अनुगामी बनाता है।

२ गायत्री मन्त्र:- गायत्री मन्त्र वैष्णव उपासना में प्रमुख मन्त्र माना जाता है। गायत्री मन्त्र को वेदमाता कहा जाता है। क्योंक गायत्री मन्त्र का जाप करने ने से वेदो को समझा जा सकता है।

ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोन: प्रचोदयात्'[16]

इस मन्त्र का जाप करने से मानव मन के अंतर्गत सकारात्मक ऊर्जा का विकास होकर व्यक्ति परमानन्द की अनुभूति कार सकता है। गायत्री मन्त्र में देवताओं का निवास माना जाता है। यह एक छंद है। वैदिक मन्त्रों में इसे शुद्धि का प्रतीक माना जाता है। गायत्री मन्त्र संस्कृत में है और संस्कृत एक योगात्मक भाषा है। इस मन्त्र के उच्चारण व अभ्यास से मानव की इंद्रिया पवित्र हो जाती है और मेधा मे वृद्धि होती है। इस मन्त्र के देवता सविता है।

इस प्रकार हमारे भारतीय दर्शन में मन्त्रों की परम्परा बहूत लम्बी है। कई ग्रन्थों में शान्तिकरण मन्त्र, भूतप्रेतरोगादि निवारण मन्त्र, सर्प भय

[15] मन्त्र सिद्धि (रहस्य) पृ ७६ - ८३

[16] ऋग्वेद अध्याय - ३६

निवारण मन्त्र, उच्चाटन, मारन मोहन मन्त्र, आकर्षण, वशीकरण, विद्वेषण, स्तंभन, पुष्टिकर्म, निधिदर्शन, बान आदि मन्त्र - तन्त्रों का उल्लेख भी मिलता है। अथर्ववेद के विभिन्न मन्त्रों की व्याख्या विभिन्न ग्रंथों मे देखने को मिलती है।

संदर्भ

1. बलदेव उपाध्याय: 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', शारदा निकेतन ५ बी, कस्तूरबा नगर, सिगरा वाराणसी - २२१०१०
2. वाचस्पति गैरोला: 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी - २२१००१
3. सदानंद योगी कृत - 'वेदान्तसार' सं. रामस्वरुप, खेमराजश्रीकृष्णदास, श्री वैंकटेश्वर छापाखाना, मुंबई सम्बत् १९५७
4. सदानंद योगी कृत - 'वेदान्तसार' सं. आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन २६ बलरामपुर हाउस इलाहवाद - २११००२
5. लक्ष्मी नारायण शर्मा - 'मन्त्र तन्त्र साधना', वर्ल्ड बुक कम्पनी, ३०१, कूचा मीर आशिक, चावडी बाजार, दिल्ली ११०००६
6. गोविन्द शास्त्री: मन्त्र सिद्धि(रहस्य), साधन पौकेट बुक्स ३६ यू. ए., बैग्लो रोड, दिल्ली ११०००६
7. लल्लूलाल जैन गोधा: यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र विद्या, कून्थु विजय ग्रन्थ माला समिति, जौहरी बाजार, जयपुर ३०२००३
8. राधाकृष्ण प्रसाद: बृहत् कामाक्षा मन्त्र सार, श्रीदूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, ६३ सूतापट्टी बड़ा बाजार, कलकत्ता - ६ संस्करण २१, १९५६
9. https://www.inflibnet.ac.in
10. https://www.sanskritacademi.delhi.gov.in
11. www.epustakalay.com